साम्प्रदायिक सौहार्द्र

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

किसी भी देश की उन्नति के लिए भाईचारा, विश्वबंधुत्व, सोहार्द्र और परस्पर एकता की बहुत अधिक आवश्यकता होती है। हमारे देश में अनेक धर्म है, और धर्मों के अन्तर्गत अनेक मतमतान्तर है। विभिन्न भाषाभाषी, विभिन्न धर्मों के मानने वाले लोग यहां पर रहते है। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो विभिन्नता में एकता भारत की राष्ट्रीय पहचान है। इसी एकता के कारण भारत शक्तिशाली और मजबूत भी है। धर्म वस्तुतः बांटता नहीं बल्कि जोड़ता है। धर्मों के कारण एकजुटता बढ़ती है। किन्तु जब धर्म को राजनीति से जोड़कर इसका नाजायज फायदा लिया जाता है तब देश को नुकसान होता है। धर्म को आजकल सम्प्रदाय से जोड़ दिया गया है। हर सम्प्रदाय के अनुयायी अपने सम्प्रदाय को एक दूसरे से बड़ा दिखाने के लिए प्रायः लड़ते–झगड़ते रहते है। इसका परिणाम यह होता है कि समाज में साम्प्रदायिक विद्वेष की भावना बढ़ने लगती है। यदि सभी धर्मों के अनुयायी अपने–अपने सम्प्रदाय के अनुसार पूजा–पाठ, धार्मिक आचरण और विधिनियम का पालन करे तो सभी धर्मों और सम्प्रदायों का विकास होगा। जहां पर मेरा सम्प्रदाय और धर्म श्रेष्ठ है और अन्य लोगों का नहीं यह भावना आ जाती है वहीं पर समाज में फूट पड़ने लगती है। समाज के कुछ असामाजिक तत्व इस फूट का लाभ लेकर समाज में विद्वेष फैलाते है और साम्प्रदायिक भावना को भड़काते है। जिससे समाज में दंगे–फसाद और खून–खराबा होता है। भारतीय संविधान एक धर्म निरपेक्ष संविधान है। धर्म निरपेक्षता का अर्थ है कि राज्य के द्वारा या राष्ट्र के द्वारा किसी धर्म विशेष को बढ़ावा नहीं दिया जायेगा, या राष्ट्र का अपना कोई धर्म नहीं है। राष्ट्र में रहने वाले लोग अपने मत, सम्प्रदाय और धर्म के अनुसार चाहे जिस धर्म में विश्वास करे, चाहे जिस धर्म का पालन करे, राष्ट्र या संविधान का उसमें कोई हस्तक्षेप नहीं है। यहां के निवासी किसी भी धर्म को मानने के लिए स्वतंत्र है। साम्प्रदायिक सौहार्द्र के लिए यह आवश्यक है कि एक ही समाज में रहने वाले सभी वर्गों के लोग एक दूसरे के सामाजिक उत्सवों, व्रतों, त्योहारों में भाग ले और प्रसन्नतापूर्वक एक दूसरे से गले मिलकर शुभकामना वितरित करे।

प्रेम, बंधुत्व, सोहार्द्र को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। हर सम्प्रदाय के अनुयायी का खान–पान, रहन–सहन, जीवनयापन करने की शैली भिन्न–भिन्न होती है। किन्तु मानवता के नाते सभी एक दूसरे से मिले हुए है। सबसे बड़ा धर्म मानव धर्म है। मानव धर्म यह कहता है कि सभी के सुख–दुःख में हमें भाग लेना चाहिए और उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ना चाहिए। साम्प्रदायिक सौहार्द्र बढ़ते–बढ़ते विश्वबंधुत्व में बदल जाता है। भारत की राष्ट्रीय नीति यह है कि पड़ोसी देशों के साथ शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के साथ रहा जाये। प्रायः मानव यह सोचता है कि उसके द्वारा जो कुछ किया जाता है वही धर्म है किन्तु ऐसी बात नही। शास्त्रानुकूल आचरण ही धर्म है। धर्म मोक्षाभिमुख होता है और लौकिक सम्प्रदाय संसाराभिमुख होता है। धर्म का लौकिक कर्तव्य से भेद सुस्पष्ट है। कृषि, वाणिज्य, व्यापार आदि कार्य केवल लोक प्रर्वतन के लिए है। मूल रूप से जिस कार्य में आत्मोन्नति हो वही धर्म है। धर्म तो मूलतः आत्म विकस ही है। संप्रदाय विशेष की दृष्टि से इसके अनेक भेद है जैसे वैदिक धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम धर्म इत्यादि। प्रायः धर्म तो अंहिसा ही है इसमें सभी धर्म एक मत है किन्तु जब इसकी सांप्रदायिक दृष्टि से व्याख्या की जाती है तो वह ठीक नही है। जो मैं मानता हूं वही श्रेष्ठ है इस प्रकार की भावना श्रेष्ठ नहीं है। प्रायः देखा यह जाता है कि धर्म कि जो व्याख्या सांप्रदायिक रूप से की जाती है वह ठीक नहीं है। मार्ग भले ही भिन्न–भिन्न हो किन्तु उद्‌देश्य की सब में समानता है। यदि सभी विचार पद्धतियों में एकता हो तभी धार्मिक सहिष्णुता की संभावना हो सकती है। वैदिक दर्शन में सर्वे भवन्तु सुखिनः का सिद्धान्त लोक कल्याण का सिद्धान्त है। इसमें लोकहित की कामना की गयी है। इसी प्रकार जैन दर्शन का अनेकान्त वाद, बौद्ध दर्शन का मध्यम मार्ग, ईसाई धर्म का भाई चारा और इस्लाम धर्म का परस्पर प्रेम धार्मिक सहिष्णुता की शिक्षा देते हैं। जैसे एक शरीर के अवयव भिन्न–भिन्न हो कर भी कार्य निष्पादन में एक साथ कार्य करते है वैसे ही विभिन्न धर्मावलंबी यदि अपने विरोध भाव को छोड करके एक साथ काम करे तो यह धार्मिक सहिष्णुता का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। आचार सम्पन्न व्यक्ति का ही जीवन परिष्कृत एवं व्यवस्थित होता है। आचार के आधार पर अवलम्बित विचार जीवन का परिष्कारक होता है। मानव–मानव से प्रेम सबसे बड़ा धर्म है। धर्म में बहुजन हिताय ओर बहुजन सुखाय

की कामना की जाती है। भारतीय धर्म की यह विशेषता रही है कि अनेक आक्रान्ता इस धर्म को नष्ट करने का प्रयास किये किन्तु यह धर्म इतना उदारवादी था कि सब इसी में समाहित हो गये। इसका मूल कारण है। भारतीय धर्म अहिंसावादी है। अहिंसा का तात्पर्य है मन, वचन, काया से किसी को दुःख न देना। सबके साथ प्रेम का व्यवहार करना, सबके साथ सहिष्णुता का व्यवहार करना, सबके साथ समानता का व्यवहार करना इस धर्म के मूल में है। यहां गुणों की पूजा होती है व्यक्ति की नहीं। परस्परोपग्रहो जीवानाम् जीयो और जीने दो में विश्वास रखना साम्प्रदायिक सौहार्द्र का सबसे बड़ा सूत्र है। जहां साम्प्रदायिक सौहार्द्र नहीं रहता वहां आंतकवाद, अलगाववाद बढ़ता है और समाज विभाजित हो जाता है। अतः साम्प्रदायिक सौहार्द्र की महती आवश्यकता है।